Dr. Madan Paswan, History.

Class :- B.A. Part-I (Hons. P-I + Sub.)

Lecture No. 09.

Date : 08/08/2020

Topic : Unit-IV (iii) Harshavardhana.

Page no. 1-2.

हर्षवर्द्धन (606-647 ई०)

वर्द्धन सम्राटों में हर्षवर्द्धन सबसे अधिक यशस्वी और प्रतापी सम्राट हुआ। गुप्त साम्राज्य के विघटन के पश्चात् उत्तर भारत में जिस राजनीतिक विकेन्द्रीकरण के युग का प्रारम्भ हुआ, हर्षवर्द्धन के राज्यारोहण के साथ ही उसकी समाप्ति हुई। वर्द्धन वंश के इस यशस्वी सम्राट ने उत्तर भारत के विशाल भू-भाग को अपने साम्राज्य के अन्तर्गत संगठित कर लिया तथा अशोक और समुद्रगुप्त जैसे प्रतिभाशाली सम्राटों की ही भांति इतिहास में यश अर्जित किया।

[A] हर्ष का प्रारम्भिक जीवन : हर्षवर्द्धन का जन्म 591 ई० के लगभग हुआ वह परमभट्टारक महाराजाधिराज प्रभाकरवर्द्धन का कनिष्ठ पुत्र था। हर्षवर्द्धन की माता का नाम यशोमती था। उसका बचपन उसके ममेरे भाई भाण्डी तथा मालवराज महासेनगुप्त के दो पुत्रों कुमारगुप्त और माधवगुप्त के साथ व्यतीत हुआ। उसे राजकुमारों के अनुरूप शिक्षा-दीक्षा दी गयी। वह विविध शास्त्रों को चलाने में कुशल हो गया। युद्ध विद्या के साथ-साथ हर्ष को अन्य दूसरी विद्याओं, शास्त्रों एवं ललित कलाओं की भी शिक्षा मिली होगी और इसमें सन्देह नहीं कि उसने सभी में पर्याप्त योग्यता प्राप्त कर ली होगी। राज्यवर्द्धन की मृत्यु के पश्चात् 606 ई० में 16 वर्ष की अल्पायु में ही हर्ष थानेश्वर का राजा बना। हर्षचरित से पता चलता है कि पहले हर्ष सिंहासन ग्रहण करने में संकोच कर रहा था किन्तु सेनापति सिंहनाद के प्रेरित करने पर हर्ष सिंहासन ग्रहण करने के लिए तैयार हुआ।

राज्यारोहण के समय हर्ष के सामने दो तात्कालिक समस्याएँ थीं—

(1) शशांक को मारकर बड़े भाई राज्यवर्द्धन की हत्या का बदला लेना,

(2) राज्यश्री को कन्नौज के कारागार से मुक्त कराना।

इसके अतिरिक्त हर्ष उन सभी राजाओं एवं सामन्तों को भी दण्ड देना चाहता था, जिन्होंने समय का लाभ उठाते हुए अपनी स्वतंत्रता घोषित कर दी थी। अतः शीघ्र ही उसने एक सेना एकत्रित की तथा युद्ध के लिए प्रस्थान कर दिया।

[B] हर्ष के सैनिक अभियान :

हर्ष वीर योद्धा तथा विजेता था। अतः इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि उसने कई शक्तियों से लोहा लिया, किन्तु दुर्भाग्यवश उसके युद्धों के विषय में अधिक सुनिश्चित जानकारी प्राप्त नहीं हुआ है। उसके सम्बन्ध में विद्वानों में बहुत मतभेद हैं।

शशांक : बंगाल या गौड़ का राजा शशांक हर्ष का समकालीन था। जब मालव के राजा देवगुप्त ने कन्नौज के ग्रहवर्मा की शक्ति को नष्ट किया तो शशांक उसका मित्र था। जब राज्यवर्द्धन ने देवगुप्त को परास्त किया तो शशांक ने उसे अपने शिविर में बुलाकर उसका वध कर दिया। अतः हर्ष ने उसके खत्म करने की ठानी थी। बाण ने हर्षचरित में कहा है कि हर्ष की

(Contd...)

'दिग्विजय' गौड़ के राजा (जिसे गौड़ों में सर्वाधिक निकृष्ट और अधम गौड़ सर्प कहा गया है।) के विरुद्ध युद्ध की विस्तृत तैयारियों से आरम्भ हुई।

[C] वल्लभी का युद्ध : वल्लभी का राज्य आधुनिक गुजरात प्रान्त में स्थित था। वहाँ का शासक ध्रुवसेन-II था। हर्ष ने उस पर आक्रमण किया। ध्रुवसेन पराजित हुआ तथा उसने भागकर भड़ौंच के गुर्जर शासक दद्द द्वितीय के दरबार में शरण ली। गुर्जर नरेश ने हर्ष से उसका साम्राज्य वापस दिला दिया। इस घटना का उल्लेख गुर्जर नरेश दद्द (दद्द) के मोसारी दानपत्र में हुआ है। और दद्द की प्रथम ज्ञात तिथि 627 ई० है, जिससे यह अनुमान किया जा सकता है कि यह युद्ध 629-30 ई० के पहले नहीं हुआ होगा। दद्द ने 640 ई० तक राज किया। अतः यह कह सकते हैं कि यह युद्ध 629-30 से 640 ई० के बीच हुआ होगा।

पुलकेशिन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख के अनुसार दद्द उसका सामन्त था। अतः इसका यह मतलब निकलता है कि नौसारी लेख में जो लेख दद्द को दिलाया गया है, वस्तुतः उसका अधिकारी पुलकेशिन ही है। कालान्तर में यही घटना हर्ष-पुलकेशिन के बीच युद्ध का कारण बनी। हर्ष ने वल्लभी नरेश को अपनी ओर मिलाने के लिए अपनी पुत्री का विवाह उसके साथ कर दिया। इसके परिणामस्वरूप वह हर्ष का मित्र और सहायक बन गया। ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ हर्ष महान राजनैतिक उद्देश्य से प्रेरित था।

[Continue.....]

Date: 08/08/2020

Ajanta Officer